International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विद्यालयी वातावरण एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

शोध निर्देशिका
डॉ0 राजकुमारी सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग
आई0एफ0टी0एम0 यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद

शोधकर्ती
शिखा उपाध्याय
आई0एफ0टी0एम0 यूनिवर्सिटी, मुरादाबाद

सार

वास्तविकता में देखा जाए तो शिक्षा वह ज्ञान–नेत्र है जो देशोन्नति तथा सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया में पथ–पदर्शक या प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती है। समय व प्रथाओं की मांग के अनुसार विद्यालय व उसका स्वरूप समय–समय पर बदलने लगा हैं। आज के विद्यालयों की भूमिका में विद्यार्थी को वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं देने के साथ तकनीकी ज्ञान की भी प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। है। विद्यालय का वातावरण वास्तव में विद्यालय का दर्पण होता है। छात्र, शिक्षक, प्रधानाचार्य, विद्यालय भवन, समस्त, उपकरण, पाठ्यक्रम, समय, विभाग चक्र, शिक्षण पद्धति आदि सभी विद्यालय के अंग होते है। डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार, ''विद्यालय में व्यतीत किया गया समय बालक का सर्वोत्तम समय होता है अतः विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जो ऐसे शैक्षिक तंत्र का विकास कर सके जिससे मूल्य आधारित व लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा दी जा सके।'' सामाजिक–आर्थिक स्तर में हम पास–पड़ोस, मित्र, परिवार, सभी को सम्मिलित कर सकते हैं। साथ ही इनके द्वारा अर्जित पूँजी से इनके आर्थिक स्तर का आँकलन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण बालक के चारों तरफ के वातावरण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। एक शक्तिशाली चर होने के कारण पर्यावरण या वातावरण को बालक की शिक्षा का निर्धारण करते समय पूर्ण रूप से समझा व निधारित किया जाना चाहिये। पर्यावरण या वातावरण को समझकर ही एक शिक्षक बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

मुख्य शब्द – पर्यावरण, वातावरण, परिवेश, अनुकूलन, विद्यालयी संगठन, अपेक्षित परिवर्तन, सामाजिक शारिरीक भावात्मक क्रियाऐं, विद्यालयी वातावरण, सामाजिक आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि,।

मूल आलेख – सदियों से भारत शिक्षा संस्कृति साहित में खोज का केन्द्र बना रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब–जब समय के अनुकूल समाज में परिवर्तन लाने

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

का प्रयास किया गया है तब तब एक हथियार के तौर पर शिक्षा ही एक मात्र सहारा दिखायी दिया है। शिक्षा के प्रकाश में ही समाज की बड़ी से बड़ी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंका गया है। शिक्षा विकास तथा सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली यंत्र माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति समाज और साथ ही राष्ट्रीय जीवन को निरन्तर विकासशील बनाने की अद्भुत क्षमता रखती है। मानव तथा राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के अनेक कार्यो के महत्व को स्वोकार किया जाता ह। वतमान यग मे शिक्षा का पूंजी क रूप म स्वोकार किया जाता है। राष्ट्रीय–उत्पादन से शिक्षा का स्वीकार किया जाता है, तथा शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सशक्त साधन समझा जाता है।

वास्तविकता में देखा जाए तो शिक्षा वह ज्ञान–नेत्र है जो देशोन्नति तथा सम्पूर्ण विकास की प्रक्रिया में पथ–पदर्शक या प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती है।

प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत की शिक्षा से वर्तमान भारत की शिक्षा का स्वरूप सर्वथा भिन्न दिखाई देता है। पूर्वकालीन हिन्दू तथा मुसलमान शासकों ने अपने धर्म का प्रचार करने के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियां दी और विद्वानों की आर्थिक सहायता की तथा उन्हें राज दरबार में सम्मान भी दिया परन्तु तत्कालीन शासकों का शिक्षा के प्रशासन की और ध्यान आकृष्ट नहीं हुआ अंग्रेजों न भारतवासियों में केवल क्लर्क बनने की शिक्षा या क्षमता का विकास करना अपने हित में समझा लिहाजा छनी हुई शिक्षा ही भारतीयों तक पहुँची। इस समय के शासकों ने यह कभी समझने का प्रयास नहीं किया कि शिक्षा की जितनी सुदृढ़ व्यवस्था होगी, शिक्षा की प्रशासनिक नीति जितनी प्रभावशाली होगी वह उतनी अधिक उपयोग तथा देशोध्दार में सहायक सिद्ध होगी।

स्वतत्र भारत मे शिक्षा का परिमाणात्मक तथा गणात्मक दोनों ही रूपों में विकास किया गया शिक्षा के कारण ही व्यक्तियों के खान–पान रहन–सहन विचार–शैली दृष्टि–कोण आदि में परिवर्तन हुआ है। सामाजिक परिवर्तन तथा गतिशीलता में शिक्षा प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

व्यक्ति प्रकृति से सामाजिक होता है उसका सम्पूर्ण जीवन समाज की क्रियाकलापों से संचालित व प्रभावित होता है। वह लिखना, पढ़ना बोलना–चालना आदि क्रियायें समाज में रहकर ही सीखता है। व्यक्ति अपने वंशानुक्रम और पर्यावरण जिसमें वह रहता है दोनों के मिश्रण की उपज है। व्यक्ति हमेशा एक सामाजिक वातावरण से घिरा रहता है जो न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है बल्कि उसके सोचने समझने की क्षमता को भी प्रभावित करता है क्योंकि समाज एक ऐसा परिवेश है जिसमें व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत स्वच्छन्दता का त्याग करना पड़ता है। समाज व्यक्तियों का समूह है जिसकी रचना व्यक्तियों ने अपने हित के लिऐं की है।

जॉनडीवी के अनुसार, ''विद्यालय समाज का लघु रूप है।''

वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा की समस्याओं में वृद्धि होने के कारण शिक्षा क्षेत्र में शिक्षा के आदान–प्रदान के लिए विद्यालय को आधुनिक युग की महत्वपूर्ण शैक्षिक आवश्यकता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माना जाने लगा। समय व प्रथाओं की मांग के अनुसार विद्यालय व उसका स्वरूप समय–समय पर बदलने लगा हैं। प्राचीन काल गुरूकुल, मकतब, मदरसे ये इत्यादि विद्या/शिक्षा प्रसार के स्रोत थे आज के तकनीकी युग में तो औपचारिक शिक्षा विद्यालयों द्वारा अनौपचारिक शिक्षा घरों पर, दूरस्थ शिक्षा पुस्तकों द्वारा तथा ऑनलाइन परीक्षाओं द्वारा भी शिक्षा दी व ली जा रही है। इस सब के निचोड़ से विद्यालयों की मांग व आवश्यक्तओं का ताना बाना बुना जाता है।

आज के विद्यालयों की भूमिका में विद्यार्थी को वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं देने के साथ तकनीकी ज्ञान की भी प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। जबकि गुरूकुल या प्राचीन शिक्षा परम्पराओं के अनुसार विद्यार्थी को विद्या ग्रहण करने के लिए अधिक से अधिक तपाया जाता था, तब वह एक शिक्षक में एक पिता को देख पाता था। आज के विद्यालयों में शिक्षक केवल एक सुविधाएं प्रदान करने वाला एक माध्यम बन गया है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज भी भारत में ज्ञान से भरे शिक्षकों की कमी है। लेकिन विद्यालय के स्वरूप के चलते शिक्षक की भी भूमिका एक सीमित आय प्राप्त करने वाले कर्मचारी के समान हो गई है।

विद्यालय का परिवेश व शिक्षकों की प्रेरणा विद्यार्थियों में एक नए जोश का संचार करती है। जिस विद्यालय का वातावरण श्रेष्ठ होता है। वह विद्यालय समाज में प्रतिष्ठा का कमाता है। विद्यालय का वातावरण वास्तव में विद्यालय का दर्पण होता है। छात्र, शिक्षक, प्रधानाचार्य, विद्यालय भवन, समस्त, उपकरण, पाठ्यक्रम, समय, विभाग चक्र, शिक्षण पद्धति आदि सभी विद्यालय के अंग होते है। वैसे तो हमारे आस–पास की परिधि में जो कुछ भी फैला है। वातावरण ही है। इसके द्वारा कोई भी व्यक्ति वैयक्तिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में विकास करता है। यदि उसे अच्छा वातावरण नहीं दिया जाए तो वह/कोई आदर्श मानव के रुप में स्वस्थ नागरिक नहीं बन सकता। इसके अभाव में एक सुखद भविष्य की कल्पना नहीं की जा सकती। इस वातावरण के सृजन में वर्तमान युग में अध्यापक को ही दोषी माना जाता है वरन् इसके लिए हमारा भौतिकवादी संसार व सामाजिक मान्यताएँ भी उतनी ही दोषी है। अतः विद्यालयी वातावरण की श्रेष्ठता के लिए इस व्यवसाय के लिए केवल उन्हीं व्यक्तियों का चयन करना होगा। जो इस व्यवसाय को अपनाने के लिए स्वस्थ दृष्टिकोण रखते हों तथा अर्न्तआत्मा से प्रेरित हों।

विद्यालय में भिन्न–भिन्न जाति, वेश, सम्प्रदाय, समुदाय के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। इसी कारण प्रत्येक विद्यार्थी अपनी जाति, वंश, सम्प्रदाय, समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है जिसके फलस्वरूप विद्यालये अपने आप में एक समाज का निर्माण करता है। शिक्षा को ही मानव जीवन का आधार माना जाता है क्योंकि शिक्षा से रचनात्मक शकित का संचार होता है। शिक्षा की सहायता से ही एक विद्यार्थी अपने वातावरण से अनुकूलन करने के साथ–साथ उस पर विजय भी प्राप्त कर लेता है।

विद्यालयी वातावरण के सन्दर्भ में यदि दृष्टि डाली जाये तो पता चलता है कि प्राचीन काल में गुरूकुल व्यवस्था थी तब विद्यालयी वातावरण सम्पूर्णतः अध्यात्मिक हेाता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

था जो कि गुरू के व्यवहार व दिनचर्या के अनुसार ही चलता था। आज के आधुनिक युग में परिस्थितियाँ बिल्कुल भिन्न हैं, इस भौतिकतापूर्ण युग में सभी उद्देश्य धन/पूँजी पर आकर केन्द्रित हो जा रहे हैं। वर्तमान समय मे शिक्षा व विद्यालय दोनों ही के गुणात्मक चरित्र में गिरावट आई है। धन केन्द्रित सोच के कारण समाज में विद्यालय के लिये धारणा भी डिग्री लेने वाले इमारतों से हो गई है लिहाजा विद्यालयी वातावरण भी इससे अछूता नहीं रहा है।

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के अनुसार, ''विद्यालय में व्यतीत किया गया समय बालक का सर्वोत्तम समय होता है अतः विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जो ऐसे शैक्षिक तंत्र का विकास कर सके जिससे मूल्य आधारित व लक्ष्य केन्द्रित शिक्षा दी जा सके।'' किसी भी विद्यालय का विद्यालयी वातावरण प्रकट करत है कि उसके विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि किस प्रकार की है। चाहे उसमें माता–पिता की शैक्षिक पृष्ठभूमि, आर्थिक स्तर, पास–पड़ोस, मनोबल, शारीरिक स्वास्थ्य सभी कारक निर्भर करते हैं। इन सभी कारकों के अतिरिक्त विद्यालय में शिक्षा देने वाले शिक्षक, अन्य कर्मचारी, प्रधानाचार्य, सभी के व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं व्यवहार पर पड़ता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर– सामाजिक–आर्थिक स्तर में हम पास–पड़ोस, मित्र, परिवार, सभी को सम्मिलित कर सकते हैं। साथ ही इनके द्वारा अर्जित पूँजी से इनके आर्थिक स्तर का आँकलन कर सकते हैं वैसे तो विद्यालयी वातावरण शिक्षक व विद्यार्थी द्वारा ही निर्मित होता है लेकिन इसके निर्माण में अन्य कारक भी जिम्मेदार हेाते हैं। जैसे–

1- परिवार में माता–पिता की शिक्षा कितनी है।
2- उच्च शिक्षा प्राप्त माता–पिता का दृष्टिकोण शिक्षा के लिये उदार होता है।
3- माता–पिता का कार्य क्षेत्र उच्च स्तर है या निम्न स्तर का।
4- आस–पड़ोस में किस प्रकार की जीवन शैली जीने वाले लोग रहते हैं।
5- आस–पड़ोस सरकारी सेवा में या गैर सरकारी सेवा में है।
6- माता–पिता के कार्य करने के घण्टे पर भी बालक की शैक्षिक उपलब्धि निर्भर करती है।
7- माता–पिता या भाई–बहन के बीच संवाद का समय कितना है। परिवार में संवाद रहने से बालक को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है।
8- माता–पिता/परिवार में खान–पान की शैली कैसी है। निम्न आर्थिक स्तर क परिवारो म खाने–पोन को सविधाआ को कमो हातो है जिससे बालक का स्वास्थ्य गिरा रहता है। जिसका कि कुप्रभाव विद्यार्थी/बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
9- माता–पिता का निम्न आर्थिक स्तर होने के कारण सुविधाओं का अभाव रहता है जिससे विद्यार्थियों में हीन भावना हमेशा बनी रहती है।
10- घर, परिवार में बड़े बुजुर्ग के होने से बच्चों में जीवन सम्बन्धित कठिनाईयों का सामना करने की सीख व अनुभव मिलते हैं जिससे बच्चों में नई ऊर्जा का संचार होता हैं। व वे कठिनाईयों का सामना करने के लिये तत्पर रहते है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन सभी कारकों के साथ विद्यार्थी शिक्षक संबंध कैसा है ये बात भी अपना विशेष महत्व रखती है क्योंकि शिक्षक का कक्षा व विद्यालय में व्यवहार व ज्ञान बालक के मानसिक पटल पर एक गहरी छाप छोड़ता है। बच्चा घर से निकलकर जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह केवल अपने शिक्षक को ही अनुसरित करता है। इसके अतिरिक्त विद्यालय प्राचार्य का अनुशासन, व्यक्तित्व भी विद्याथी के जीवन में प्रेरणा स्रोत होता है। उपरोक्त बताये गये कारकों की उपस्थिति से ही प्रत्येक विद्यालय का अपना एक वातावरण बनता है और यह वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव डालता है। किसी भी छात्र की शैक्षिक उपलब्धि उसकी उन्नति तथा आगे बढ़ने की प्रक्रिया विद्यालय के वातारण पर निर्भर करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व – सामान्यतः देखा जाता है कि शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं में पाठ्यक्रम सम्बन्धित समस्याओं का प्रत्यक्षीकरण कम होता है जबकि शैक्षिक वातावरण, शिक्षकों की कार्यशैली, दृष्टिकोण तथा प्रशासन में सुधार की है। अब प्रश्न उठता है कि वातावरण संबंधित सुधार को नियमों एवं विधियों में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि इसमें तो विद्यार्थी, शिक्षक, कर्मचारी, सुविधायें, प्रशासन सभी शामिल हो जाते हैं और मुख्य बात तो यह है कि यह अधिकतर विद्यालयी पद्धति के ऊपर निभर करता है। विद्यालय में होने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यकलाप, अध्यापक और प्रधानाचार्य के बीच, अध्यापक एवं छात्रों के बीच कार्यकलाप विद्यालयी वातावरण निश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और यही वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनके व्यवहार को निर्धारित करने में प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालता है। विद्यालयी वातावरण विद्यालय में शैक्षिक तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में संगठन की उपलब्धि को सुनिश्चित करता है और इस सिद्धान्त पर बल देता है कि व्यक्ति का व्यवहार, व्यक्तित्व आर वातावरण का प्रम ा लक्षण ह।

किसी भी विद्यालय में अध्यापक का शिक्षण कौशल एवं विद्यार्थियों की सीखने की सम्पूर्ण कला तथा उनके आपसी मधुर सम्बन्धों को प्रभावति करती है।इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण बालक के चारों तरफ के वातावरण को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विद्यार्थी का स्वस्थ विकास तथा उन्नति विद्यालय को अपने लख्य की ओर प्रेरित करने में तथा उनके चारित्रिक विकास में सहायता करने में विद्यालय का संगठन और उसका वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इन सभी के अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों को सोचने व समझने की वह शक्ति प्रदान करता है जिससे वे भविष्य में अपने निर्णयों को स्वयं लेकर अपने कार्यों में सफलता प्राप्त कर सके। इन सभी विचारधाराओं से ही विद्यालय के वातावरण को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने के लिये प्रेरित किया जिनके द्वारा किये गये अध्ययनों ने वातावरण को सुधारने में सहायता की है। इसका अध्ययन सामाजिक व शैक्षिक दोनों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दृष्टियों से महत्वपूर्ण है विद्यालय के वातावरण को निर्धारित करने में सांस्कृतिक प्रभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत के परिप्रेक्ष्य में यह कारक और भी प्रभावशाली हो जाता है क्योंकि भारत में अलग–अलग प्रान्तों अलग–अलग भाषाओं, संस्कृतियों का बोलबाला है जो कि विद्यालय वातावरण को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। भारत में सभी प्रान्तों में राज्य सरकार द्वारा संचालित, केन्द्र सरकार द्वारा संचालित और कुछ सरकारी/गैर सरकारी शिक्षण संस्थान चलाये जाते हैं। जिनका आधार कहीं न कहीं भाषा भी हैं जैसे – प्रान्तीय भाषा, राष्ट्र भाषा (हिन्दी), विदेशी भाषा अंग्रेजी आदि। अलग–अलग भाषाओं के कारण विद्यालयी वातावरण में कुछ न कुछ अन्तर अवश्य पाया जाता है। और इस वातावरण का विद्यार्थिया पर कुछ प्रभाव पड़ता है या नहीं, यह भी अनुसंधान का एक विषय है।

जिस प्रकार शिक्षा का उद्दश्य व्यवहार म अपक्षित परिवत लाना है उसी प्रकार पर्यावरण या वातावरण एक शक्तिशाली चर है जो बालक को चारों ओर से घेरे रखता है व अपना प्रभाव बालक के व्यवहार पर समय–समय पर प्रभाव डालता है। एक शक्तिशाली चर होने के कारण पर्यावरण या वातावरण को बालक की शिक्षा का निर्धारण करते समय पूर्णरूप से समझा व निर्धारित किया जाना चाहिये ताकि शैक्षिक ढाँचे में आमूल–चूल परिवर्तन किया जा सके। पर्यावरण या वातावरण को समझ व जानकर ही एक शिक्षक बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त कर सकता है।

वातावरण शब्द प्रथम दृष्टि में नया और द्विअर्थी प्रतीत होता है। बहुत से अध्ययनों ने इसके लिये पर्यावरण शब्द का प्रयोग किया है लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि इन दोनों के बीच एक सीमा रेखा है जो इन दोनों शब्दों पर्यावरण और वातावरण को अलग करती है। वातावरण शब्द एक विस्तृत शब्द है जो पर्यावरण शब्द को अपने अन्दर समाहित किया हुये है। मानव सम्बन्धी तत्व जो विद्यार्थी के चारों तरफ विद्यमान हैं उन तत्वों को पर्यावरण कहते हैं, जबकि विद्यालय में सामाजिक, शारीरिक तथा भावात्मक क्रियाऐं मिलकर विद्यालयी वातावरण का निर्माण करती हैं। इस प्रकार देखा जाये तो वातावरण एक वर्ग है और पर्यावरण इस वर्ग का एक प्रकार है।

विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का आँकलन हमें कुछ पूर्व अनुसंधानों से पता चलता है जस

- **डी0सेल्स (1978)** में कक्षा के वातावरण एवं विद्यार्थियों के विकास के सम्बन्ध को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया। इस अध्ययन से उनको निम्न परिणाम प्राप्त हुये–
    - प्रत्येक कक्षा का अपना एक अलग विशिष्ट वातावरण होता है।
    - उन्होंने कक्षा के औसत वातावरण व विद्यार्थियों की उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- वे विद्यार्थी जिनका कक्षीय वातावरण उच्च स्तर का था वे उन विद्यार्थियों से ज्यादा स्वतंत्र थे जिनका कक्षीय वातावरण निम्न स्तर का था।
- ऐसे विद्याार्थी जिनका उपलब्धि स्तर उच्च था उनका अकाँक्षा स्तर निम्न था।

- **रस्तोगी (1981)** ने विद्यालयो वातावरण, विद्यार्थियों के मनोविज्ञान, स्वास्थ्य व उनकी कक्षा अन्तःक्रिया का उनकी सन्तुष्टि के सन्दर्भ में अध्ययन किया इसके लिये उन्होंने कक्षा 9 से लेकर 12 तक के 480 अध्यापकों को व कक्षा 10 से 12 तक के 9000 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप म चना। य न्यादश उन्हाने इलाहाबाद के 19 विद्यालयों से यादृच्छिक रूप से लिया और पाया कि विद्यालय का वातावरण छात्रों की संतुष्टि व असंतुष्टि से सम्बन्धित है । खुला विद्यालयी वातावरण रखने वाले विद्यालयों में विद्यार्थियों का संतुष्टि स्तर उच्च था।
  - विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण छात्रों की संतुष्टि व असंतुष्टि से सम्बन्धित नहीं है।
- **नटराजन एवं दण्डपाणी (2003)** ने विद्यालय संगठनात्मक वातावरण व विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों के बीच में सहसम्बन्ध को स्थापित करने के लिये एक अध्ययन किया जिसमें पाया कि
  - विद्यालयों के विभिन्न प्रकार के वातावरण और विद्यार्थियों की उपलब्धियों के बीच कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
  - उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के लिये नियंत्रित वातावरण सहायक था जबकि निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के लिये स्वायत्त वातावरण जिम्मेदार था।
  - निजी क्षेत्रों में खुले विद्यालयी वातावरण वाले विद्यालय अधिक मात्रा में हैं जबकि सराकरी विद्यालय बन्द विद्यालयी वातावरण के मिले।
- **शर्मा (1968)** ने राजस्थान में चुरू जिले के सराकारी विद्यालय व गैर सरकारी विद्यालय के वातावरण में कोई भी सार्थक अन्तर नहीं पाया। शर्मा ने पाया कि संगठनात्मक वातावरण छात्रों की उपलब्धि से साथक रूप से सम्बन्धित था। विद्यालय, जिनका स्वतंत्र व खुला वातावरण था, जब उनकी तुलना बन्द वातावरण वाले विद्यालयों से की गयी तो पाया गया कि खुले वातावरण वाले विद्यालयों का उपलब्धि सूचकांक सार्थक रूप से उच्च था।
- **फोरहैन्ड और ग्रिलमर (1971)** ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तिगत विशेषताओं और पर्यावरण संबंधी चरों के बीचमें व्यवहार गतिशील अन्तः क्रिया है। उसने वातावरण के संगब्ति गुणों को ऐसे रूप में परिभाषित किया जो किसो स ठन में व्यक्ति के प्रभाव को बढ़ाता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 08, August 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

- **निष्कर्ष–**

अन्तिम पटल की ओर बढ़ते क्रम में हम कह सकत हैं कि विद्यालयी वातावरण एक ऐसा शक्तिशाली कारक है जा बालक के सर्वांगीण व चतुर्मुखी विकास में एक धुरी की भूमिका अदा करता है। सहानुभूति रखने वाले विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी के विकास के लिये बहुत महत्वपूर्ण होता है साथ ही यह सीखने वाले के लिये एक उत्तजक का कार्य करता है। जिस प्रकार शिक्षा का उद्देश्य व्यवहार में परिवर्तन लाना है उसी प्रकार पर्यावरण या वातावरण एक शक्तिशाली चर है जो बालक को चारों ओर से घेरे रखता है व अपना व्यवहार बालक के व्यवहार पर डालता है। एक शक्तिशाली चर होने के कारण पर्यावरण या वातावरण को बालक की शिक्षा का निर्धारण करते समय पूर्ण रूप से समझा व निर्धारित किया जाना चाहिये। पर्यावरण या वातावरण को समझकर ही एक शिक्षक बालक में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन करने में सफलता प्राप्त कर सकता है इसके लिये एक शिक्षक को वातावरणीय अध्ययन का ज्ञान आवश्यक है। यह वातावरणीय अध्ययन विद्यालय वातावरण में परिवर्तनों की आवश्यकता को पहचानने के लिये बहुमूल्य सूचनायें प्रदान करता है।

अंत में विद्यालय का वातावरण उस अनुभूति की ओर संकेत करता है जो विशेष विद्यालय के सदस्यों के कर्तव्य के अन्तःक्रिया के फलस्वरुप होता है। इस पकार विद्यालय वातावरण एक व्यक्तित्व के रुप में कार्य करता ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- Buch, M. B. (1987) Third Survey of Research in education, New Delhi, NCERT.
2- Sharma, R. A. (2008) Research in Education, Lal Book Depot.
3- Puachauri G. (2008) Teacher in Emerging Indian Society, Loyal Book Depot, Meerut.
4- Natrajan and Dandapani (2003) organizational climate and the academic achievement of pupils in schools. The Education Review. Vol.- 46 (i)
5- Rastogi, R. P. (1881) school climate, Psychological, health and classroom functioning of student in relation to their satisfaction Vol. III, Ph. D. Education, Kumaun University.
6- De-Sales M. : An Investigation into the factors affecting classroom climate in relation to pupil development, Vol. III, Ph. D. Education, P.883.
7- विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन पृ0सं0 21.22,38,39,40,233,234।
8- शिक्षक एवं पर्यावरणीय शिक्षा, डा0 नीरज कुमार शुक्ला पृ0सं0 1 व 2।
9- विद्यालय शिक्षा में समावेशन प्रो0 विजय जायसवाल एवं डा0 प्रियंका गुप्ता पृ0सं0 207।
10- https://hi.m.wikipedia.org>wiki
11- https://ncst.nic.in/hi/content/socio-economic-development